

महात्मा बुद्ध के उपदेश एवं शिक्षाएँ

महात्मा बुद्ध भोग—विलास और महलों के सुख के बीच रहकर भी जीवन के कुछ कठोर सत्यों यथा—जन्म, जरा, रोग, मृत्यु, दुःख और अपवित्रता आदि से अत्यन्त प्रभावित थे। अतः उनकी ऐसी धारणा बन गयी थी कि जब तक मनुष्य इसे दूर करने का प्रयत्न नहीं करेगा, तब तक उसे इस सबसे छुटकारा प्राप्त नहीं हो सकता। उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना करके समाज में व्याप्त दुर्गुणों, रुद्धियों एवं कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने दुःख—ग्रस्त जनमानस को अपने उपदेशों द्वारा दुःख—मुक्त करने की कोशिश की। महात्मा बुद्ध के जनकल्याणकारी

उपदेशों से न केवल भारत ही अपितु विश्व के अनेक देश प्रभावित हुए तथा इस धर्म की ओर आकृष्ट हुए।

महात्मा बुद्ध के उपदेशों में ‘चार आर्य सत्य’ मुख्य है। उन्होंने ऋषिपत्तन में सर्वप्रथम पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को चार आर्य सत्यों का ही उपदेश दिया था। इन चार आर्य सत्यों का बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः इन्हीं चार आर्य सत्यों में सारा बौद्ध धर्म अन्तर्मूर्त है। आर्यसत्य का वास्तविक अर्थ है—यथार्थ सत्य। चार आर्य सत्यों को सभी कुशल धर्मों का मूल कहा जाता है। जितने कुशल धर्म हैं वे सभी आर्य सत्य में निहित हैं। इन आर्य सत्यों का ज्ञान किसी—किसी को स्त्रोतापन्न अवस्था में आंशिक रूप से होता है और किसी—किसी को सकृदागमी और अनागमी अवस्था में। किन्तु अर्हत् अवस्था में पूर्णरूप से इनका ज्ञान होता है। बौद्ध धर्म के अनुसार जब मनुष्य को इन चार आर्य सत्यों का ज्ञान हो जाता है तब उसकी तृष्णा का विनाश हो जाता है। दुःख के मूल का अन्त हो जाता है तथा फिर उसे इस संसार में जन्म नहीं लेना पड़ता। बुद्ध द्वारा उपदेशित ‘चार आर्य सत्य’ बौद्ध धर्म के मूल आधार हैं। ये आर्य सत्य हैं—दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध तथा दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा। इन चार आर्य सत्यों में चतुर्थ—‘दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा’, अश्टांगिक मार्ग है। बौद्ध धर्म के अनुसार इन अश्टांगिक मार्गों का अनुपालन करके जीव संसार रूपी भव सागर से निर्वाण की ओर अग्रसर हो सकता है। जनकल्याण हेतु सांसारिक मायामोह से मुक्ति के अनन्तर बुद्ध ने सद्धर्म को मूलरूप से इन चार आर्य सत्यों द्वारा उपदेशित किया। मानव जाति के कल्याण हेतु बुद्ध द्वारा उपदेशित इन चार आर्य सत्यों का विशद वर्णन निम्नलिखित है—

(क) प्रथम आर्य सत्य — दुःख (दुःख अरिय सच्च)

गौतम बुद्ध ने अपने द्वारा उपदेशित धर्म के मूलाधार ‘चार आर्य सत्य’ — में दुःख को, जिससे कि संसार का प्रत्येक प्राणी त्रस्त था, ‘प्रथम आर्य सत्य’ माना है। गौतम बुद्ध का प्रथम आर्य सत्य है कि संसार दुःखमय है, संसार में दुःख ही दुःख व्याप्त है (सर्व दुःखम)। उनके अनुसार संसार के सभी पदार्थ विनाशी होने के कारण दुःखदायी है। जैसा कि सर्वविदित है कि गौतम बुद्ध ने जरा—मरण, शोक एवं रोग

के दृश्यों को देखकर ही घर छोड़ा था। बुद्धत्व— प्राप्ति के बाद संसार में व्याप्त दुःखों के विषय में उनकी अनुभूति और भी प्रबल हो गयी। उन्होंने यह घोषित किया कि मानव तथा मानवेतर जीवन, सम्पूर्ण चराचर जगत् दुःखमय है, दुःखों से परिपूर्ण है। उन्होंने दुःखों की व्यापकता का वर्णन करते हुए कहा कि, 'यह जन्म भी दुःखपूर्ण है, बुद्धापा भी दुःखपूर्ण है, मृत्यु, शोक, रुदन, अप्रिय से संयोग एवं प्रिय से वियोग, इच्छित वस्तु की अप्राप्ति, सब कुछ दुःखपूर्ण है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार एवं विज्ञान—ये पाँचों उपादन स्कन्ध दुःखपूर्ण हैं। संक्षेप में कहें तो उनके अनुसार जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सम्पूर्ण जीवन दुःखपूर्ण है। किंवा, हम संसार में जिसे सुखद समझते हैं वह भी दुःखपूर्ण है। बुद्ध के अनुसार सांसारिक सुखों को यथार्थ समझना मूर्खतापूर्ण है। सुखों को प्राप्त करने के प्रयास में दुःख होता है। सुख प्राप्त होने के बाद यह चिन्ता दुःखपूर्ण है कि कहीं यह नष्ट न हो जाय। इसके नष्ट होने पर तो दुःख मिलता ही है। मृत्यु भी दुःख का अन्त नहीं है, अपितु नये दुःखों की शुरुआत है, क्योंकि उसके बाद पुनर्जन्म होता है। इस प्रकार जन्म एवं मृत्यु का क्रम चलता रहता है और व्यक्ति इसमें पिसकर दुःख भोगता रहता है। बौद्ध दर्शन में दुःख की व्यापकता इस उद्धरण से ज्ञात होती है कि, 'जब से जगत चला आ रह है तब से जितने आँसू बहे हैं उनकी तुलना में सभी सागरों की जलराशि भी कम है'। दुःखों की इस गहन अनुभूति के आधार पर गौतम बुद्ध ने प्रथम आर्य सत्य के अन्तर्गत कहा है कि जीवन दुःखों से परिपूर्ण है।

(ख) द्वितीय आर्य सत्य — दुःख समुदाय (दुःख समुदय अरिय सच्च)

गौतम बुद्ध का द्वितीय आर्य सत्य है दुःख समुदाय। इस आर्य सत्य में महात्मा बुद्ध ने दुःख के कारण की खोज की है। उनके अनुसार दुःख उत्पन्न होता है और दुःख के उत्पन्न होने का कारण भी है, क्योंकि संसार में कोई भी घटना अकारण घटित नहीं होती है। इस आर्य सत्य के अन्तर्गत उन्होंने कारणता के उस सार्वभौम सिद्धान्त की भी खोज किया जिसके आधार पर दुःख के कारणों का पता लगाया। गौतम बुद्ध के द्वितीय आर्य सत्य को 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के नाम से जाना जाता है। यह एक प्रकार का कारणता सिद्धान्त है जिसे आश्रित-उत्पत्ति का सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसके अनुसार किसी वस्तु के होने पर ही अन्य वस्तु

की उत्पत्ति होती है। गौतम बुद्ध ने दुःखों के कारणों की खोज की प्रक्रिया में बारह कड़ियों वाली एक लम्बी श्रृंखला की खोज की है जिसकी अन्तिम कड़ी अविद्या है और महात्मा बुद्ध के अनुसार यही समस्त दुःखों का मूल कारण है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अन्तर्गत 'द्वादश निदान' की अभिव्यंजना की गयी है जो एक दूसरे को उत्पन्न करने के कारण हैं। ये द्वादश निदान हैं –

1. अविद्या
2. संस्कार
3. विज्ञान
4. नामरूप
5. षडायतन
6. स्पर्श
7. वेदना
8. तृष्णा
9. उपादान
10. भव
11. जाति
12. जरामरण

इस प्रकार गौतम बुद्ध ने अपने द्वितीय आर्य सत्य के अन्तर्गत दुःख के कारणों की खोज के क्रम में कुल बारह कड़ियों की खोज की है तथा अविद्या को मूल कारण माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का मूल कारण है। इसका कोई कारण नहीं है।

चूँकि गौतम बुद्ध द्वारा विवेचित इस कारण–कार्य श्रृंखला में बारह कड़ियाँ हैं, अतः इसे 'द्वादश निदान–चक्र' कहते हैं। इसे प्रतीत्यसमुत्पाद चक्र, दुःख–चक्र, जरा–मरण चक्र, संसार–चक्र और भव–चक्र भी कहा जाता है। इस द्वादश निदान चक्र में व्यक्ति का भूत, वर्तमान एवं भविष्य, तीनों जीवन व्याप्त है। अविद्या एवं संस्कार का सम्बन्ध व्यक्ति के भूतकालीन जीवन से है। विज्ञान, नामरूप, षडायतन,

स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान और भव व्यक्ति के वर्तमान जीवन से सम्बन्धित हैं। जाति और जरामरण का सम्बन्ध व्यक्ति के भविष्य जीवन से है। उल्लेखनीय है कि द्वादश निदान चक्र की ये बारह कड़ियाँ एकरेखीय क्रम में न होकर एकवृत्तीय क्रम में हैं। ये वृत्तीय क्रम में घूमती रहती हैं। यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक मूलभूत कारण (अविद्या) नष्ट नहीं होता। इसलिये मृत्यु दुःखों का अन्त नहीं है, अपितु नये दुःखों की शुरूआत है। दुःखों का अन्त तो अविद्या के अन्त होने से ही सम्भव है। बुद्ध के अनुसार ज्ञान ही अविद्या का अन्त करके व्यक्ति को निर्वाण की ओर ले जाने में समर्थ है। वस्तुतः प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध दर्शन का आधार स्तम्भ है।¹²³ इसे जाने बिना बौद्ध धर्म को नहीं समझा जा सकता है। इसकी महत्ता को प्रकट करते हुये मणिम निकाय में कहा गया कि “जो प्रतीत्यसमुत्पाद को समझता है, वह धर्म को समझता है और जो धर्म को समझता है वह प्रतीयसमुत्पाद को समझता है।”

(ग) तृतीय आर्य सत्य—दुःख निरोध (दुःख निरोध अरिय सच्च)

गौतम बुद्ध का तृतीय आर्य सत्य दुःख निरोध है। इसका अर्थ है कि दुःखों का अन्त सम्भव है। यह आर्य सत्य बौद्ध दर्शन को दुःखवादी एवं निराशावादी होने से बचाता है। गौतम बुद्ध ने इस बात पर बल दिया है कि चूँकि दुःखों का मूलभूत कारण अविद्या है, अतः अविद्या को दूर करके दुःखों का भी अन्त किया जा सकता है। दुःख निरोध बौद्ध दर्शन तथा भगवान बुद्ध के उपदेशों का सर्वस्व है। यह निर्वाण है, अमृत पद है जो वस्तुतः अविद्या के विनाश के फलस्वरूप द्वादशांग प्रतीत्यसमुत्पाद चक्र के निरुद्ध होने से प्राप्त होता है। महात्मा बुद्ध के अनुसार इसी जीवन में ही दुःखों का निरोध सम्भव है।

बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख निरोध ही निर्वाण है। इतिवृत्तक में वर्णित है कि ‘निर्वाण’ शान्ति एवं श्रेष्ठता है, सभी संस्कारों का भामन है, चित्त मलों का परित्याग है, तृष्णा का क्षय है तथा विराग का स्वरूप है। इस प्रकार दुःख के मूल कारण अविद्या के विनाश होने से दुःख का निरोध हो जाता है। यही दुःख निरोध महात्मा बुद्ध के सम्पूर्ण दर्शन का केन्द्र बिन्दु था। भिक्षुओं को समझाते हुये तथागत

ने कहा था कि रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान का अवरोध ही दुःख निरोध है।

(घ) चतुर्थ आर्य सत्य—दुःख निरोध गामिनी प्रतिपद(दुःख निरोध गामिनी पटिपदाअरिय सच्च)

महात्मा बुद्ध ने चतुर्थ आर्य सत्य मे दुःख निरोध का उपाय बताया है। बौद्ध साहित्य में यह आर्य सत्य 'दुःख निरोध गामिनी प्रतिपद' के नाम से प्रसिद्ध है। यह नैतिक और आध्यात्मिक साधना का मार्ग है। इसे 'मध्यमा प्रतिपद' या 'मध्यम मार्ग' भी कहा जाता है। यह अत्यधिक भोग विलास एवं भारीर को अत्यन्त क्षीण करने वाली तपस्या के बीच का मार्ग है। इस मध्यमा प्रतिपद मे कुल आठ सोपान हैं। अतः इसे अश्टांगिक मार्ग भी कहते हैं। यह साधना का वह मार्ग है जो मनुष्य को वांछित लक्ष्य तक पहुँचाता है। इसके आठों सोपान निम्नलिखित हैं—

1. सम्यक् दृष्टि

महात्मा बुद्ध के अनुसार, दुःखों का कारण अविद्या या मिथ्या दृष्टि है। बौद्ध द नि में दुःखद, अनित्य, अयथार्थ एवं हेय विशयो को सुखद, नित्य, यथार्थ एवं उपादेय समझना मिथ्या दृष्टि है, अतःइस मिथ्या दृष्टि का परित्याग करके वस्तुओं के असली स्वरूप को समझना तथा चार आर्य सत्यों का ज्ञान रखना बौद्ध द नि के अनुसार सम्यक् दृष्टि है।

2. सम्यक् संकल्प

आर्य सत्यों के ज्ञान के अनुरूप आचरण करने का दृढ़ नि चय बौद्ध द नि में सम्यक् संकल्प है। यहाँ निर्वाण चाहने वाला व्यक्ति सांसारिक विशयों मे आसक्ति, दूसरों के प्रति विद्वेश और हिंसा का परित्याग करने का दृढ़ नि चय करता है।

3. सम्यक् वाक्

सम्यक् संकल्प के अनुरूप वाणी का नियन्त्रण सम्यक् वाक् है। इसमें मिथ्यावादिता, निन्दा, दुर्वचन और वाचलता का परित्याग तथा सत्य भाशण अपेक्षित है।

4. सम्यक् कर्मान्त

बौद्धों के अनुसार सम्यक् संकल्प के अनुरूप कर्म का नियमन सम्यक् कर्मान्त है। कर्मणा अहिंसा, अस्तेय तथा इन्द्रिय—संयम अर्थात् इन्द्रिय भोग का परित्याग एवं ब्रह्मचर्य पालन ही सम्यक् कर्मान्त है।

5. सम्यक् आजीव

बौद्धों के अनुसार लोकसम्मत उपायों से अर्थात् न्यायपूर्ण तरीके से जीविकोपार्जन करना सम्यक् आजीव है। बौद्ध दर्शन के अनुसार यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि निशिद्ध उपायों से जीविकोपार्जन करने सेमनुश्य में बुरी प्रवृत्तियाँ आती हैं।

6. सम्यक् व्यायाम

महात्मा बुद्ध इस बात पर जोर देते हैं कि वाणी और कर्म को धर्म मार्ग की ओर प्रेरित करने वाली भावनाएं शुद्ध हों। उनके अनुसार इसके लिए व्यक्ति को इस बात का सतत् प्रयास करना चाहिए कि मन के पुराने बुरे भाव नश्ट हो जाय, नये बुरे भाव मन में पुनः न प्रविश्ट हों, मन सदैव अच्छे विचारों से युक्त रहे, तथा मन में इन अच्छे विचारों को धारण करने की सतत् चेशटा होती रहे। इस प्रकार का प्रयत्न बौद्ध दर्शन के अनुसार सम्यक् व्यायाम है।

7. सम्यक् स्मृति

बुद्ध के अनुसार आर्य सत्यों के मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक है कि ज्ञात विशयों की स्मृति सदैव बनी रहे, क्योंकि इस बात की सम्भावना बनी रहती है कि ज्ञात विशय विस्मृत हो जाय और व्यक्ति पुनः सांसारिक विशयों में लिप्त हो जाय। इसके लिए बुद्ध इस बात पर बल देते हैं कि शरीर, वेदना, चित्त एवं धर्म की क्षणिकता का ठीक—ठीक स्मरण रखना आव यक है। सम्यक् स्मृति से शरीर, वेदना, चित्त एवं धर्म के प्रति व्यक्ति का कोई अनुराग नहीं होता, फलस्वरूप वह तज्जन्य दुःखों का भागी नहीं होता।

8. सम्यक् समाधि

सम्यक् समाधि का अर्थ है, चित्त की एकाग्रता द्वारा प्रज्ञा की अनुभूति। बौद्ध धर्म में समाधि की चार अवस्थाओं का वर्णन प्राप्त होता है। समाधि की प्रथम अवस्था सवितर्क, सविचार और विवेक से उत्पन्न प्रीति वाली अवस्था है। इसमें व्यक्ति भान्ति चित्त से आर्य सत्यों का तर्कपूर्वक चिन्तन करता है तथा भुद्ध विचार के कारण अपूर्व आनन्द तथा भान्ति का अनुभव करता है। द्वितीय अवस्था में प्रगाढ़ चिन्तन के कारण वितर्क और विचार भान्ति हो जाते हैं और भान्ति तथा चित्तैकाग्रता से युक्त आनन्द प्राप्त होता है। तृतीय अवस्था में मन आनन्द और भान्ति से भी हटकर उपेक्षाभाव को प्राप्त करता है। इसमें चित्त की साम्य अवस्था तथा दैहिक सुख का भाव बना रहता है। समाधि की चतुर्थ अवस्था में साम्य अवस्था, दैहिक सुख एवं समाधि का आनन्द, किसी का भी ज्ञान नहीं होता। यह अवस्था पूर्ण भान्ति, पूर्ण विराम तथा पूर्ण निरोध की अवस्था है। यह सुख-दुख से रहित है। इसमें प्रज्ञा का उदय होता है और सभी दुःखों का निरोध हो जाता है।

अश्टांगिक मार्ग का बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी महत्ता को समझाते हुए गौतम बुद्ध ने कहा था कि भिक्षुओं जिस प्रकार गंगा, यमुना, अचिरावती, सरयू और मही नदियाँ पूर्व की ओर बहने वाली तथा समुद्र की ओर अभिगामिनी होती हैं। उसी प्रकार भिक्षुओं अभ्यास करने पर अश्टांगिक मार्ग, निवार्ण की ओर ले जाने वाला है। आचार्य अ वघोश ने सौन्दरानन्द में अष्टांगिक मार्ग को त्रिस्कंध यथा-शील समाधि और प्रज्ञा में विभाजित किया है। प्रज्ञा के अन्तर्गत सम्यक् दृष्टि और सम्यक् संकल्प आते हैं। शील में सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त्, सम्यक् आजीव और सम्यक् व्यायाम का समावेश होता है जबकि समाधि के अन्तर्गत सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि आते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चतुर्थ आर्य सत्य में निर्वाण प्राप्ति के लिए शील समाधि और प्रज्ञा की शिक्षा दी गयी है। बौद्ध दर्शन में इसे 'त्रिशिक्षा' कहा जाता है। बुद्ध के अनुसार जो शील में प्रतिष्ठित है, समाधि और प्रज्ञा की भावना रखता है वह मनुष्य प्रज्ञावान एवं वीर्यवान होकर तृष्णा का नाश करके निर्वाण प्राप्त करता है।

अष्टांग अतिरिक्त महात्मा बुद्ध ने नैतिक आचरण के लिए दस शील भी बतलाये, जो निर्वाण प्राप्ति हेतु आवश्यक थे। इन दस शीलों का अनुशीलन नैतिक जीवन का आधार है। इन दस शीलों को 'शिक्षापद' भी कहा गया है। महात्मा बुद्ध द्वारा बतलाये गये दस शील इस प्रकार हैं—

1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय (चोरी न करना)
4. अपरिग्रह (सम्पत्ति का परित्याग)
5. ब्रह्मचर्य
6. संगीत और नृत्य का त्याग
7. अंजन, फूल और सुवासित द्रव्यों का त्याग
8. असामायिक भोजन का त्याग
9. सुखद भाष्या का त्याग
10. कामिनी और कंचन का त्याग।

उक्त भीलों में प्रथम पाँच, जिसे पंच शील कहा गया है, गृहस्थियों के लिए था। साधु—महात्माओं और भिक्षुओं को समस्त भीलों का पालन करना अनिवार्य था। महात्मा बुद्ध के ये संदेश सबके लिए हैं। नर और नारी, युवा और वृद्ध, अमीर और गरीब सभी समान रूप से उन पर आचरण कर सकते हैं और इस जीवन—मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बुद्ध द्वारा गवेशणा किये गये दुःख, दुःख समदाय, दुःख निरोध, तथा दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा — इन 'चार आर्य सत्यों' में चतुर्थ आर्य सत्य की देशना में बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग का विधान प्रस्तुत किया जिसके अनुकरण से समस्त दुःखों का प्रहाण हो जाता है।

चार आर्य सत्य एवं दश भीलों के अतिरिक्त महात्मा बुद्ध की उन शिक्षाओं पर दृष्टिपात करना भी प्रासंगिक है, जो उन्होंने जनसामान्य को दिया था, जो पथ प्रदर्शक की भाँति हमारे मार्ग को निर्देशित करती रही हैं। उनके वे दृष्टान्त, कथायें

एवं शिक्षायें इतनी मार्मिक एवं व्यावहारिक हैं कि वह जनसामान्य के हृदय में स्वतः प्रवेश कर जाती थीं और मनुष्य को उनकी महत्ताओं पर सोचने के लिए विवश कर देती थीं। महात्मा बुद्ध की नैतिक शिक्षायें अनूठी थीं। ये शिक्षायें मनुष्य को समाज की वास्तविकताओं एवं स्वयं उसके विचारों से परिचित कराती रही हैं। धम्मपद में महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेश संकलित है। यह मनुष्य का प्रारम्भ से स्वभाव रहा है कि वह प्रत्येक कार्य में दूसरों के ही दोष को देखता है और उसको अपने दोष का अहसास तक नहीं होता। इस सम्बन्ध में महात्मा बुद्ध का कथन है—“दूसरों के दोष देखना सरल है, किन्तु अपना दोष देखना कठिन है। मनुष्य अपने पड़ोसी के दोषों को तो भूसे की भाँति उड़ाता है किन्तु अपने दोषों को वैसे ढांकता है, जैसे कोई कपटी एवं खोटे पासे का जुआरी।” उनकी सरल शिक्षा का प्रमुख प्रभाव बाद के धर्मों पर भी पड़ा। धम्मपद में वर्णित है कि द्वेश से द्वेश कदापि दूर नहीं होता है। तथागत की शिक्षा थी कि हमें आनन्दपूर्वक रहना चाहिए, जो हमसे विरोध करे, हमें उनका विरोध नहीं करना चाहिए। जो हमसे द्वेष करते हैं, उनके मध्य रहते हुए भी हमें द्वेष से दूर रहना चाहिए। क्रोध पर प्रेम से और बुराई पर भलाई से विजय प्राप्त करना चाहिए।